© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 02 | January – March 2018

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

सविता रानी, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय,
गांव -किरतान,जिला- हिसार (हरियाणा)

ISSN : 2348-5612 © URR

समाज एक ऐसा समूह होता है जो मिल -जुलकर साथ रहता है । अर्थात् मानव के समूह में रहने की प्रवृत्ति को समाज का नाम दे दिया समाज में व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर आश्रित रहता है ।इन संबंधों का एक बहुत बड़ा जाल बन जाता है और इसी जाल को समाज की संज्ञा दी जाती है । समाज अत्यंत व्यापक है और एक गतिशील व्यवस्था है । यह हर समय परिवर्तित होता रहता है। प्राचीन काल का समाज आधुनिक काल के समाज से बहुत भिन्न था । तब से लेकर आज तक के समाज में समय-समय पर उसके रीति-रिवाज ,खान-पान ,बोली- भाषा, रहन - सहन ,वेशभूषा आदि आमूल परिवर्तन देखा जा सकता है। समाज के इस परिवर्तन में मनुष्य द्वारा बनाये जाने वाले नियमों की प्राथमिकता होती है। इन्हीं नियमों के अंतर्गत रहकर ही मानव समाज विकास की ओर बढ़ता है । इस विकास के विषय में रामविलास शर्मा ने लिखा है कि -

सामाजिक विकास में मनुष्य की इच्छाओं और उनके विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन यह भूमिका प्रकृति या समाज की परिस्थितियों से स्वतंत्र नहीं है। वह उन के नियमों को परखकर ही उनके बदलने का काम पूरा कर सकती है । इसलिए प्रकृति और समाज के परिवर्तन और विकास के नियमों को समझने की जरूरत है मनुष्य अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता हुआ पशु जीवन से निकलकर मनुष्य बना है।1

मानव स्वयं सामाजिक प्राणी है । समाज हमारे आपके जीवन की प्रतिध्वनि होता है । समाज शब्द अत्यंत व्यापक और उसकी समस्याएं इससे कहीं अधिक व्यापक है । सारी चेतना जो व्यक्ति विशेष की न होकर एक ही काल में अनेक व्यक्तियों या समुदाय , समाज ,राष्ट्र या सम्पूर्ण मानव जाति की संपत्ति की सामाजिक चेतना है । यही चेतना मानव को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है । हर रचनाकार अपने समय और समाज की गतिविधियों से प्रभावित होता रहा । जिसका वर्णन वह अपनी रचनाओं में करता रहता है । उपन्यासकार का व्याक्तित्व भी बराबर सक्रिय रहता है। और वह इन उपन्यासों में सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को लेकर अपने स्वतंत्र विचार और प्रतिक्रियाएँ प्रकट करता है । दूसरे शब्दों में इस श्रेणी के उपन्यासों में समाज का केवल वर्णन नहीं अपितु उसकी अच्छाई - बुराई का विवरण रहता है ।

卐 हिंदी में सामाजिक उपन्यासों का प्रारंभ मुंशी प्रेमचंद से होता है ।卐2 इनके सामाजिक उपन्यास में अग्रांकित विशेषताएँ दिखाई देती हैं--

1. करुणा और व्यंग्य का प्रसार
2. पात्रों का सामाजिक रूप
3. समाज का आधार परिवार
4. मानवतावादी दृष्टिकोण
5. ईश्वर की अपेक्षा सामाजिक को महत्व ।

प्रेमचंद ने शोषित एवं पीड़ित समाज के प्रति करुणा बनाई है और शोषक और पीड़ित के प्रति तीखा व्यंग्य किया है , उनके उपन्यासों में शोषित ग्रामीण एवं नागरिक समाज की दारुण दशा का चित्रण है उन्होंने शोषित वर्ग के पीछे प्रेरक शोषक शक्ति के रूप में विदेशी शासन सत्ता का स्वरूप प्रस्तुत किया है । उन्होंने किसान की कारुणिक आर्थिक दशा का वर्णन किया है राजा जमींदार लोग अपने आदमियों को किरायेदार मात्र न समझकर अपना दास मानते हैं। अपने या अपने विलासी मेहमानों के पाप पूरे करने के लिए किसानों से ब्लात् निःशुल्क काम बेगार लेते थे।

प्रेमचंद ने किसानों की आर्थिक मानसिक दशा तथा दहेज ,अनमेल विवाह ,बहु विवाह ,वैधव्य आदि कुप्रथाओं का चित्रण सामाजिक उपन्यास सेवासदन ,वरदान ,निर्मला ,प्रतिज्ञा,गबन आदि में किया है।

सेवासदन :-

प्रेमचंद ने सन् 1917 में उर्दू में %बाजरे हुस्न% नाम से एक उपन्यास लिखना प्रारंभ किया जिसका हिंदी रूप हुआ %सेवासदन% 3 प्रेमचंद ने अपने आर्य समाजी संस्कार के कारण सेवासदन की कल्पना की थी। यदि आर्य -समाज का ही प्रभाव सेवासदन की कल्पना के पीछे होता तो प्रेमचंद आर्यसमाजी जोश में इन वेश्यापुत्रियों से विवाह करने का आंदोलन भी खड़ा कर सकते थे । किंतु सेवासदन में इस तरह के किसी आंदोलन का संकेत नहीं मिलता । इस उपन्यास में प्रेमचंद प्रश्न की कठिनता को प्रस्तुत कर छोड़ देते हैं । वे ऐसा अनुभव कर रहे थे कि सदियों से बिगड़ा हुआ हिंदू समाज जल्द सुधरने वाला नहीं है।%4

अतः सेवासदन में समाज में व्याप्त बुराइयों का चित्रण ही नहीं प्रहार भी किया और उपन्यास के माध्यम से लोगों में चेतना का संचार किया है।

वरदान :-

इसमें मध्यवर्गीय समाज के समिति पक्ष के साथ अंतर्गत प्रेम और अनमेल विवाह की समस्या पर दृष्टिपात किया गया है । % वरदान % में किसानों की युद्ध दशा का वर्णन है ।शरीर श्रम के ऊपर इन किसानों का

अपना वश है । लेकिन विधाता पर नहीं आंखें आकाश की और टंगी रहती है । गांव में काशीनाम का एक घर है जिस पर देवता उतर आया है इस देवता से गांव के किसान जो जिज्ञासा करते हैं वह इन शब्दों में वरदान में प्रस्तुत करते हैं--

卐महाराज अब के वर्ष खेती की उपज कैसी होगी ,पानी कैसा बरसेगा ? बीमारी आएगी या नहीं 卐5 । इसमें समस्याएं तो उठायी गयी हैं किंतु प्रेमचंद उनके वर्णन विश्लेषण में प्रौढ़ता नहीं भर सके । प्रेमचंद को यह मालूम था कि भारतीय किसान की सबसे बड़ी समस्या ऋण की समस्या है । वह यह भी जानते थे कि % कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर लौटता नहीं है । वरदान में राधा के पिता के ऊपर ₹20 का ऋण है जिसके निपटाने में वह असमर्थ सिद्ध हुआ है।%6

卐मझगांव के किसान मुगालिये के आंतक से त्रस्त दिखाए गए हैं卐।7

प्रतिज्ञा =

प्रतिज्ञा एक समस्या प्रधान कहानी के ढांचे में निर्मित उपन्यास है ,विधवाओं की समस्या मुख्य कहानी के रूप में प्रस्तुत की गयी है । %प्रतिज्ञा% में आकर प्रेमचंद के सामने विधवा समस्या अपनी सारी गुरुता के साथ खड़ी हो जाती हैं । जहां %प्रेमा % में अमृत राय पहले पूर्णा और बाद में प्रेमा के साथ विवाह करता है ।8 वही %प्रतिज्ञा% में पंडित अमरनाथ के आगे विधवा से विवाह करने के लिए प्रतिश्रुत होकर भी वह विवाह नहीं करता ।9

प्रतिज्ञा में साहस का नहीं बल्कि %प्रेमा की समस्या% को प्रतिज्ञा में कैसे ग्रहण करते हैं और फिर उस समय कोई परिवर्तन हुआ ही नहीं । आर्य समाज का इतिहास भी हमें इस विवाह में प्रमाण दे जाता है ।

अतः यह कहा जा सकता है कि मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास सामान्य जनों की सामाजिक चेतना से घिरा हुआ है । स्वयं प्रेमचंद सामान्य जन के बीच से उभरे हैं ।उनकी रचनाओं का कथा सुनसान हमें हमारे आसपास घूमता फिरता दिखाई पड़ता है ।उनकी दृष्टि इन्हीं सामाजिक कमियों को ढूंढती है और अपनी रचनाओं के काफी मार्फत आमजन की बुझी हुई बुद्धि की चेतना को जागृत करने का सफल प्रयास करते हैं । इस कारण अपनी रचनाओं में सामाजिक स्थितियों का खुलासा यथार्थ का से करते हैं ।

संदर्भ =--

1. रामविलास शर्मा ,मानव सभ्यता का विकास, पृष्ठ-13
2. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां, जय किशन प्रसाद ,खंडेलवाल ,पृ. -728
3. कलम का सिपाही ,प्रेमचंद ,अमृतराय, पृ. -654
4. प्रेमचंद घर में ,शिवरानी देवी ,पृ.-185
5. वरदान ,प्रेमचंद ,पृ.-74
6. वही, पृ. -77

7. वही, पृ.–78

8. मगंलाचरण,प्रेमचंद,पृ.–214 और 346

9. प्रतिज्ञा, प्रेमचंद ,पृ.–148.